सम्पादकीय 2
राम और राष्ट्र के लिए समर्पण के भाव से मनाएँ दीपावली पर्व

3
2115 यूनिट रक्तदान
उ.प्र. के युवा संगठन की प.वं. माताजी को अभूतपूर्व श्रद्धांजलि

शांतिकुंज का स्वच्छता सेवा पखवाड़े में गंगा सफाई अभियान

5

8
नवरात्र पर्व
साधना से अहंकार का विसर्जन होता है।
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अक्टूबर 2025

वर्ष : 38, अंक : 08
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अक्टूबर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-12

नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

नारी इस संसार की सर्वोत्कृष्ट पवित्रता है। जननी के रूप में वह अगाध वात्सल्य लेकर इस धरती पर अवतीर्ण होती है। पत्नी के रूप में त्याग और बलिदान की, प्रेम और आत्मदान की सजीव प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ठित होती है। बहिन ने रूप में स्नेह, उदारता और ममता की देवी जैसी परिलक्षित होती है। पुत्री के रूप में वह कोमलता, मृदुलता, निश्छलता की प्रतिकृति के रूप में इस नीरस संसार को सरस बनाती रहती है।

नारी में जहाँ अनंत गुण हैं, वहाँ एक दोष ऐसा भी है, जिसके स्पर्श करते ही असीम वेदना से छटपटाना पड़ता है, वह रूप है-नारी का रमणी रूप। नारी के कामिनी और रमणी के रूप में जो एक विष की छोटी-सी पोटली छिपी हुई है, उस सुनहरी कटार से हमें बचना ही चाहिए। **अपने से बड़ी आयु की नारी को माता के रूप में, समान आयु वाली को बहिन के रूप में, छोटी को पुत्री के रूप में देखकर, उन्हीं भावनाओं का अधिकाधिक अभिवर्द्धन करके हम उतने ही आह्लादित और प्रमुदित हो सकते हैं, जैसे माता सरस्वती, माता लक्ष्मी, माता दुर्गा के चरणों में बैठकर उनके अनंत वात्सल्य का अनुभव करते हैं।**

हम गायत्री उपासक हैं, भगवान की सर्वश्रेष्ठ सजीव रचना को नारी रूप में ही मानते हैं। नारी में भगवान की करुणा, पवित्रता और सदाशयता का दर्शन करना हमारी भक्तिभावना का दार्शनिक आधार है।

उपासना में ही नहीं, व्यावहारिक जीवन में भी हमारा दृष्टिकोण यही रहना चाहिए। हमें नारी को उस स्वरूप में पुनः प्रतिष्ठित करना होगा, जिसकी एक दृष्टि मात्र से मानव प्राणी धन्य होता रहा है। नारी मात्र को हम पवित्र दृष्टि से देखें। वासना की दृष्टि से न सोचें, न उसे देखें, न उसे छुएँ। मानवीय दुर्बलता को देखते हुए दाम्पत्य जीवन में एक सीमित मर्यादा के अंतर्गत वासना को छूट मिल सकती है, इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन भी ऐसा ही पवित्र होना चाहिए, जैसा कि दो सहोदर भाइयों का या दो सगी बहिनों का होता है।

उपरोक्त पंक्तियों में नारी का जैसा चित्रण नर की दृष्टि से किया गया है, ठीक वैसा ही चित्रण कुछ शब्दों के हेर-फेर के साथ नारी की दृष्टि से नर के संबंध में किया जा सकता है। मनुष्य की दृष्टि से दोनों ही लगभग समान क्षमता, बुद्धि, भावना एवं स्थिति के बने हुए हैं। दोनों में अपनी-अपनी विशेषताएँ और अपनी-अपनी न्यूनताएँ हैं, उनकी पूर्ति के लिए दोनों एक-दूसरे का आश्रय लेते हैं। नारी के प्रति नर और नर के प्रति नारी पवित्र, पुनीत, कर्त्तव्य और स्नेह का सात्विक एवं स्वर्गीय संबंध रखते हुए भी माता, पुत्री या बहिन के रूप में सखा, सहोदर, स्वजन और आत्मीय के रूप में श्रेष्ठ संबंध रख सकते हैं। **पवित्रता में जो अजस्र बल है, वह वासना के नारकीय कीचड़ में कभी भी दृष्टिगोचर नहीं हो सकता।** वासना और प्रेम दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे से उतने ही भिन्न हैं, जितनी स्वर्ग और नरक में भिन्नता है। पवित्रता में त्याग, उदारता, शुभकामना, सहृदयता और शांति के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता ।

युग निर्माण सत्संकल्प में, 'आत्मवत् सर्वभूतेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्, परदारेषु मातृवत्' की पवित्र भावनाएँ भरी पड़ी हैं, इन्हीं भावनाओं के आधार पर नवयुग का सृजन हो सकता है।

उपासना जीवन की सर्वोत्तम आवश्यकता है

मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि

मनुष्य का व्यक्तित्व उसके विचारों का प्रतिबिंब है और उपासना श्रेष्ठ चिन्तन एवं उत्कृष्ट व्यक्तित्व के निर्माण का एक सशक्त माध्यम है। मस्तिष्क की बनावट कुछ ऐसी है कि वह चिन्तन के लिए आधार ढूँढ़ता है। जैसा आधार होगा, उसी स्तर का चिन्तन चल पड़ेगा। तदनुरूप क्रिया-कलाप होंगे।

मनुष्य का चिन्तन मन को ही नहीं, शरीर को भी प्रभावित करता है। अधिकांश मनोकायिक रोग निकृष्ट चिन्तन के परिणाम ही होते हैं, इस तथ्य को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में एक मत से स्वीकार किया जा रहा है।

मानवीय चिन्तन व्यक्तियों एवं वातावरण से प्रभावित होता है। दुर्जन, अनाचारी, दुराचारी के साथ रहने वाला व्यक्ति उनसे प्रभावित होता है। संत, महात्मा के सान्निध्य में रहने वाला उनके आचरण को ग्रहण करता है। उनकी गतिविधियाँ एवं अनुभूतियाँ भी उसी स्तर की होती हैं।

उपासना का अवलम्बन

वर्तमान समय में श्रेष्ठ व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्तियों का अभाव है। बहुलता गये-गुजरे एवं हेय व्यक्तित्व वालें इंसानों की है। इन परिस्थितियों में अनुकूल वातावरण की अपेक्षा करना एक विडम्बना है। समस्या यही खड़ी होती है कि मानवीय व्यक्तित्व को श्रेष्ठ कैसे बनाया जाये? विचार करने पर एक ही रास्ता दिखाई पड़ता है, वह है उपासना का अवलम्बन। उपासना से जुड़ी आदर्शवादी मान्यताएँ एवं प्रेरणाएँ ही चिन्तन को श्रेष्ठ एवं व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बना सकने में समर्थ हो सकती हैं।

व्यक्तित्व का परिष्कार ही उपासना का लक्ष्य होता है। उपासना की समग्रता एवं उसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों को भली-भाँति समझा जा सके, तो व्यक्तित्व निर्माण का एक सुदृढ़ आधार मिल सकता है। उपासना में इष्ट से जुड़े आदर्शों एवं उच्च स्तरीय सिद्धान्तों द्वारा साधक को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। इष्ट में तन्मय होने का अभिप्राय है उच्चस्तरीय आदर्शों एवं सिद्धान्तों में लीन हो जाना और उसके अनुरूप आचरण करना। उपासना के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण की यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया चलती रहती है। उपासना में तन्मयता की पराकाष्ठा साधक-साध्य के बीच विभेद को समाप्त कर देती है। द्वैत से उठकर 'अद्वैत' की स्थिति बन जाती है। फलस्वरूप इष्ट की अनुभूतियाँ साधक को होने लगती हैं। मीरा का **कृष्ण के प्रति** भक्ति में एकाकार हो जाना, रामकृष्ण परमहंस द्वारा सर्वत्र काली का दर्शन करना, काली के स्वरूप में स्वयं का अस्तित्व भूल जाना उपासना की तन्मयता एवं उसकी प्रतिक्रियाओं का ही प्रभाव है। यह असामान्य स्थिति न भी हो, तो भी साधक के विचारों का

परिशोधन होता जाता है, भाव-संवेदनाओं में आदर्शवादिता जुड़ने लगती है।

इष्ट व आदर्शों की प्रतिष्ठापना

उपासना में इष्ट का निर्धारण क्या हो, यह व्यक्तिगत अभिरुचि एवं मनःस्थिति के ऊपर निर्भर करता है। अपने चिन्तन को लक्ष्य की ओर नियोजित किए रखने के लिए साकार अथवा निराकार, किसी भी इष्ट का अवलम्बन लिया जा सकता है। उपासना के साथ जुड़े चिन्तन-प्रवाह में आदर्शवादिता का जितना अधिक पुट होगा, उसी स्तर की सफलता प्राप्त होगी। इष्ट से तादात्म्य और उससे मिलने वाले दिव्य अनुदानों से वह आधार बन जाता है, जिससे साधक अपने चिन्तन एवं गतिविधियों को श्रेष्ठता की ओर मोड़ सके।

आधुनिक मनोविज्ञान ने नये तथ्यों का उद्घाटन किया है, जो आध्यात्मिक मान्यताओं की पुष्टि करते हैं। चिन्तन को व्यक्तित्व का मूल आधार माना जाने लगा है। मनोविज्ञान की शोधों ने सिद्ध किया है कि मनुष्य का जैसा भी आदर्श होगा, उसके अनुरूप ही उसका व्यक्तित्व ढलेगा। आदर्श यदि श्रेष्ठ है, तो चिन्तन और गतिविधियों में भी उत्कृष्टता का समावेश होगा। इसके विपरीत निकृष्ट आदर्श निम्नगामी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देंगे, हेय व्यक्तित्व ही गढ़ेंगे। उपासना में इष्ट का निर्धारण परोक्ष रूप में श्रेष्ठ आदर्शों की ही प्रतिष्ठापना है, जिसके निकट आने, तादात्म्य स्थापित करने वाला भी उसी के अनुरूप ढलता-बनता चला जाता है।

उपासना से स्वास्थ्य लाभ

प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. 'हेनरी लिंडलहर' अपनी पुस्तक 'प्रैक्टिस ऑफ नेचुरल थेरेप्यूटिक्स' में उपासना के प्रभावों के विषय में लिखते हैं कि किसी दिव्य सत्ता, देवदूत अथवा सर्वव्यापी चेतना से एकत्व स्थापित करके हम निश्चयपूर्वक शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुधार सकते हैं। उनका कहना है कि हम जिस प्रकार की आत्मा का ध्यान करते हैं, उससे हमारा सम्पर्क उसी प्रकार स्थापित हो जाता है, जिस प्रकार वायरलेस के द्वारा संसार के विभिन्न रेडियो स्टेशनों से सम्पर्क हो जाता है। दिव्य सत्ताओं से सम्पर्क एवं उनसे मिलने वाली दिव्य प्रेरणाओं से आध्यात्मिक ही नहीं, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन का लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।

उपासना को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में स्वीकार करते हुए प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक 'कार्ल जुंग' ने कहा है कि सभी धर्मों में प्रचलित उपासनाएँ मानव स्वास्थ्य एवं समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। उनका कहना है कि संसार के सभी मानसिक चिकित्सक मिलकर भी उतने रोगियों को आरोग्य प्रदान नहीं कर पाते, जितना कि संसार का छोटे से छोटा धर्म कर पाता है। मानसिक अशान्ति एवं असंतोष का कोई स्थाई उपचार किसी भी चिकित्सा प्रणाली में उपलब्ध नहीं है।

चिन्तन में उत्कृष्टता एवं व्यक्तित्व में समग्रता के समावेश के लिए उपासना का अवलम्बन आवश्यक है। इसमें व्यक्ति एवं समाज के सर्वतोमुखी परिष्कार एवं प्रगति के सभी आधार विद्यमान हैं। समस्याओं की जटिलता एवं परिस्थितियों की विषमता के निराकरण के लिए उपासना आज की सर्वोत्तम आवश्यकता है।

अखण्ड ज्योति, जून 1980, पृष्ठ 6
से संकलित, सम्पादित

राम और राष्ट्र के लिए समर्पण के भाव से मनाएँ दीपावली पर्व

पर्व के उल्लास के साथ अपने आराध्य के आदर्शों को जीवन में धारण करें और उस दिव्य चेतना के संवाहक बनें

पर्वों की प्रगतिशील प्रेरणाएँ

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम सत्य, न्याय, प्रेम, संकल्प, शौर्य के प्रतीक हैं। उनका जीवन निजी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नहीं, जनमानस के उत्थान के लिए समर्पित रहा। अयोध्या के ज्येष्ठ राजकुमार के रूप में, परिवार में पिता और सभी माताओं के आज्ञाकारी लाडले पुत्र और ज्येष्ठ भ्राता के रूप में उन्होंने सभी को भरपूर प्रेम, प्रोत्साहन और सम्मान दिया। महर्षि विश्वामित्र के शिष्य के रूप में असुरता से लोहा लेने की बारी आई तो स्वयं आगे बढ़कर चुनौतियों का सामना किया। जिस प्रेमभाव के साथ उन्होंने अपने जीवन की सभी मर्यादाओं और दायित्वों का पालन किया, उसी प्रेमभाव के साथ वे राजपाट का लेशमात्र भी मोह न करते हुए वनवास के लिए चले गए। दीपावली अपने उन्हीं इष्ट, आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के आदर्शों के अनुगमन की प्रेरणा देते हुए अंतःकरण में अलौकिक आनन्द की अनुभूति रही है, तब भी और आज भी।

हम सब चाहते हैं कि राम हमारे जीवन में प्रतिष्ठित हों। इसी के लिए तरह-तरह से जप, तप, पूजा-पाठ, भजन साधना की जाती है। जीवन में राम की प्रतिष्ठा सुखदायी और आनन्ददायी है। रामराज्य की स्थापना का मतलब है भय, भेद, राग, द्वेष रहित, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से ओतप्रोत समाज का निर्माण। आज पूरे विश्व को ऐसे ही रामराज्य की, उज्ज्वल भविष्य की आस है।

राम सत्य हैं, शाश्वत हैं, सनातन हैं। वे तब भी थे और आज भी हैं। राम तो घट-घट वासी हैं, वे तो कण-कण में समाये हैं। अपनी अज्ञानता और मलीनताओं के कारण हम ही उनसे दूर हो गए हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण सत्संकल्प के पहले ही सूत्र में लिखा है, ''हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।'' दीपावली पर्व अंतःकरण में सद्ज्ञान, सद्भाव और भक्तिभाव का दीप जलाकर उस सर्वव्यापी, न्यायकारी ईश्वर के, राम के दर्शन की प्रेरणा देने वाला पर्व है। जब राम जीवन में रम जाते हैं तो जैसे पापी रावण सीता को छू भी नहीं पाया था, उसी तरह व्यक्ति के जीवन से हर तरह के पापाचार-अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अहंकार आदि तिरोहित होते जाते हैं। जहाँ राम हैं, वहीं रामराज्य है।

जीवन का सौभाग्य

युगों-युगों बाद कभी ऐसा अवसर आता है जब भगवान राम जैसी ईश्वरीय चेतना पतित मानवता का उत्थान करने सशरीर अवतरित हुआ करती है। लोगों को उनका सहज सान्निध्य प्राप्त करने और उनके ऊर्जा अनुदानों से जीवन को सँवारने का वह अवसर मिलता है, जो सामान्य समय में कठोर तप साध्य हुआ करता है। हमारा परम सौभाग्य है कि जो ईश-चेतना त्रेता युग में मानवता को असुरता से मुक्ति दिलाने के लिए राम के रूप में अवतरित हुई थी, वही आज परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के रूप में मानवमात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य की संरचना का संकल्प लेकर अवतरित हुई है। उन दिनों रीछ-वानरों को भगवान के काम में साझेदारी का जो अवसर मिला था, वही अवसर आज हमें भी प्राप्त हुआ है। बड़े सौभाग्यशाली हैं वे लोग, जो अवसर को पहचान कर इस युग की अवतारी चेतना के साथ जुड़ गए।

भगवान को पहचानने के लिए निर्मल मन और विवेक की आँखों की आवश्यकता होती है। माता शबरी ने राम को पहचाना था, इस युग में बूढ़ी और बीमार माता छपको को वह सौभाग्य मिला। छुआछूत की पराकाष्ठा वाले युग में नन्हें बालक श्रीराम ने पूरे परिवार और सारे समाज की चेतावनी और प्रतिबंधों की परवाह न करते हुए जिस श्रद्धा और लगन के साथ अत्यंत बीमार और लाचार हरिजन माता की झोंपड़ी में जाकर कई दिनों तक सेवा-सुश्रुषा की, उसे याद कर वे जीवन भर यही कहती रहीं, ''मैंने उस राम को नहीं देखा, लेकिन इस युग के श्रीराम में उन्हीं भगवान के दर्शन किये हैं।

इस युग में युगऋषि, परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने विश्व मानवता के उत्थान के लिए कितना बड़ा कार्य किया है, यदि उसका आकलन किया जा सके तो उस ईश्वरीय चेतना को पहचानना सरल हो जायेगा। उन्होंने और परम वंदनीया माताजी ने दलित, वंचित, पिछड़ों, विधवाओं, नारियों सहित समाज के हर वर्ग को प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप आद्यशक्ति माँ भगवती गायत्री की उपासना-साधना का अधिकार दिलाकर उनमें नवप्राणों का संचार किया है। उन्होंने करोड़ों लोगों को सद्विचार, संस्कार और भरपूर प्यार देकर सम्मान एवं स्वाभिमान युक्त आनन्दपूर्ण जीवन का अहसास कराया है। उन युग साधकों के अंतःकरण में गुरुदेव-माताजी प्रभु श्रीराम की तरह ही विराजते हैं।

राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ सिद्धि के लिए आज जाति-धर्म के नाम पर न जाने कितने झगड़े-झंझट खड़े किये जा रहे हैं, लेकिन ऋषियुग्म ने विराट गायत्री परिवार का निर्माण कर इन सारे विवादों से सहज ही मुक्ति दिलाई और हर व्यक्ति को आध्यात्मिक साम्यवाद की अनुभूति कराई है।

लाखों-करोड़ों युवाओं ने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रेरणा पाकर अध्यात्म की राह अपनाई और महानता के पथ पर चल पड़े हैं। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से करोड़ों लोग व्यसनमुक्त जीवन जी रहे हैं।

समय की पुकार

आज दीपावली पर परम्पराएँ निभाना ही पर्याप्त नहीं है, उनके प्रयोजन को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए विवेकपूर्वक सक्रियता अपनाने की आवश्यकता है। त्रेता युग में भगवान राम का और इस युग में युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का अवतरण एक ही उद्देश्य के लिए हुआ है, वह है अपने समय की अवांछनीयताओं और असुरता को निरस्त कर मानवता को पीड़ा-पतन से मुक्ति दिलाना। उस युग में रीछ-वानरों ने उन्हें पहचाना और उनके जीवन लक्ष्य के प्रति समर्पित हो गए। अयोध्यावासियों ने भगवान राम से अगाध प्रेम पाया और रामराज्य की स्थापना में उनके साझेदार बने।

वर्तमान युग में लाखों लोगों ने गुरुदेव-माताजी का अनन्य प्रेम पाया है और उनके कृपानुदानों से अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन किया है। लाखों नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने युग निर्माण आन्दोलन के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। अखण्ड दीप के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष के कारण इस अभियान को कई गुना तीव्र गति मिली है। समय की माँग है कि हमारी संस्कृति में रचे-पचे दीपावली पर्व पर ऐसी स्वस्थ परंपराएँ अपनाई जायें, जो पर्व की सार्थकता सिद्ध करने के साथ नवयुग के निर्माण में प्रभावशाली भूमिका निभा सकें।

कुछ प्रगतिशील प्रेरणाएँ

हम ऐसा दीपोत्सव मनाएँ, जो राम और राष्ट्र के लिए समर्पित हो। युग चेतना के प्रभाव से इन दिनों हमारी संस्कृति और हमारे राष्ट्र का वर्चस्व पूरे विश्व में तेजी से बढ़ रहा है। यह बढ़ना भी चाहिए, क्योंकि हमारी सनातन संस्कृति में ही विश्व शांति, मानवता के उत्थान एवं सबके कल्याण के बीज सन्निहित हैं। देव संस्कृति के सर्वहितकारी सूत्र हर व्यक्ति तक, हर वर्ग तक पहुँचें, ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं।

समूह चेतना के विकास में योगदान

कठपुतली के खेल में कमाल तो उन्हें नचाने वाले बाजीगर की अँगलियों का ही होता है, जो दिखाई नहीं देतीं। विशालकाय पेड़ ही दिखाई देता है, मोल फलों और फूलों का होता है, लेकिन उनको सतत पोषण देने वाली जड़ें कहाँ दिखाई देती हैं? उसी प्रकार इन दिनों राष्ट्र की प्रगति में प्रत्यक्ष कारण कोई भी दिखाई दे रहा हो, लेकिन इस परिवर्तन में गायत्री उपासकों के सामूहिक पुरुषार्थ से हो रहे समूह चेतना के जागरण की अहम भूमिका निभा रही है। इस समूह चेतना का प्रभाव बम और मिसाइलों से भी कहीं अधिक है। इस चेतना को घनीभूत करने में देश के हर व्यक्ति की साझेदारी की आवश्यकता है।

जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में

इस वर्ष देश के अधिकांश गाँवों तक ज्योति कलश रथ यात्राएँ पहुँची हैं। दीपावली के अवसर पर उन गाँवों सहित विभिन्न क्षेत्रों में समूह चेतना के विकास के लिए विशेष दीपयज्ञों का आयोजन किया जा सकता है। लोगों से अपने-अपने पूजा घर में या घर के द्वारों पर गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म चेतना के स्वागत के भाव से विशेष दीपक जलाने और 24 बार गायत्री मंत्रोच्चारण करने का आह्वान किया जा सकता है।

स्वदेशी ही अपनाएँ

दीपावली उत्सव में स्वदेश का स्वाभिमान हो। अपने उद्योग-धंधों को बढ़ावा देना राष्ट्र की बड़ी सेवा है। इन दिनों देवासुर संग्राम अनेक मोर्चों पर लड़ा जा रहा है। मीडिया और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों के साथ यह लड़ाई बाजार में भी चल रही है। लक्ष्मी-गणेश के चित्र, मूर्ति, दिये, पूजन सामग्री, पटाखे, लाइटिंग, सजावटी सामान आदि हर वस्तु पर विदेशी प्रभुत्व दिखाई देता है। इससे देश को धन और रोजगार की हानि तो हो ही रही है, वस्तुओं की पवित्रता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। धर्म-अधर्म के संघर्ष के वर्तमान समय में हम अपने राष्ट्र को मजबूत करने का हर तरह से प्रयास करें, स्वदेशी सामानों का उपयोग करें। हम ऐसे प्रयास भी करें, जिनसे छोटे कारीगरों और गरीबों का हित सधता हो।

सम्पन्नता और सामर्थ्य के प्रदर्शन से बचें

दीपावली पर्व मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का स्वागत पर्व है। इसमें विवेक के देवता गणेश और सुख-समृद्धि की देवी माता महालक्ष्मी की पूजा की जाती है। इसमें दीपों की भाँति त्याग, समर्पण की प्रेरणा, अंधकार को चुनौती देने की और संघर्ष व झंझावातों से लड़ने की प्रेरणा निहित है। घर की साफ-सफाई में स्वच्छता एवं आंतरिक शुचिता का भाव छिपा है। सुंदर रंगोली हृदय के उल्लास को दर्शाती है। इन परम्पराओं में सच्ची भक्तिभावना निहित है।

दीपावली पर्व सम्पन्नता और सामर्थ्य के प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा है। दीपावली अब बल्बावली और पटाखावलि बन गई है। भारत में प्रति वर्ष लगभग 100 अरब रुपये का पटाखों का व्यापार होता है। केवल तमिलनाडु की शिवाकाशी की पटाखा फैक्टरियों ने गत वर्ष 6,000 करोड़ रुपये के पटाखों की बिक्री की। यह जानते हुए भी कि पटाखे जलाना पर्यावरण के लिए गंभीर संकट पैदा करता है, पटाखे और आतिशबाजी की होड़ लगी है। पटाखों के कारण हर वर्ष सैकड़ों की संख्या में बीमारों, वृद्धों और बच्चों की जान चली जाती है। पटाखों के शोर और धुएँ से हर वर्ष लाखों की संख्या में पक्षी और जानवर मारे जाते हैं। पटाखों से अनेक घरों में आग लग जाती है। हम विवेकपूर्वक सोचें, लोकहित का ध्यान रखें, अपव्यय से बचें।

चेहरों पर लायें मुस्कान

दीपावली खुशियाँ बिखेरने का त्यौहार है। हम अपने घर, परिवारों, मित्रों, रिश्तेदारों में तो दीपावली पर खुशियाँ बाँटते ही हैं, यदि समाज में जरूरतमंदों के चेहरों पर मुस्कान ला सकें तो हमारा पर्व मनाना सार्थक हो जायेगा। अस्पतालों में जाकर बीमारों को, अनाथालयों में बच्चों को, वृद्धाश्रमों में बुजुर्गों को तथा झुग्गी-झोंपड़ियों में रह रहे जरूरतमंदों को स्नेह के मरहम की आवश्यकता होती है। दीपावली के दिन हम उनके चेहरे पर मुस्कान लाने का कारण बन सके तो उनकी शुभकामनाएँ हमारे जीवन के लिए वरदान बन जायेंगी।

एक दिया सैनिकों के नाम

राष्ट्र की प्रगति में देश की सीमाओं की सुरक्षा कर रहे जवानों का बहुत बड़ा योगदान है। हर घर में दीपावली के दिन उनके सम्मान में एक दिया जलाया जाये, राष्ट्र की रक्षा में शहीद हुए जवानों के घर जाकर उनका सम्मान किया जाये। अपनी जान की परवाह न करते हुए राष्ट्र की सुरक्षा, सुव्यवस्था में समर्पित जवानों का उत्साहवर्धन हमारा नैतिक धर्म है।

सद्भाव और सहकार बढ़े

राम राष्ट्र की चेतना हैं, हमारी संस्कृति के आदर्श हैं। उन्होंने अपने जीवन से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए जो आदर्श प्रस्तुत किये, उन्हें अपनायें। समाज में सद्भाव, समरसता एवं सहकारिता की भावना बढ़े, तभी हमारा दीपावली पर्व मनाना सार्थक है।

भारत के बढ़ते वर्चस्व के अनुरूप चुनौतियाँ भी निरंतर बढ़ती जा रही हैं। हमें इनसे निपटने की तत्परता अपनानी होगी। समय की माँग है कि दीपावली के दीप जलाते समय अंतर्ज्योति भी जलायें। इस युग के श्रीराम तो अपने शक्ति अनुदानों से हमें निहाल करने के लिए आतुर हैं, हनुमान की तरह हम अपनी सामर्थ्य को पहचानें और सक्रिय हो जायें।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

परम वंदनीया माताजी के जन्म दिवस पर 2115 यूनिट रक्तदान

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश की अभूतपूर्व श्रद्धांजलि

सुल्तानपुर के 1008 युवाओं ने रक्तदान कर रचा कीर्तिमान

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश ने स्नेहसलिला, भाव संवेदनाओं की जीवंत प्रतिमा परम वंदनीया माताजी को उनके 99वें जन्मदिवस-21 सितंबर 2025 को प्रदेश के 37 जिलों में रक्तदान शिविरों का आयोजन कर सार्थक श्रद्धाञ्जलि दी। परपीड़ा निवारण के इस महायज्ञ में जनपद सुल्तानपुर ने अभूतपूर्व पुरुषार्थ करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

उमड़ा जनसैलाब

सुल्तानपुर में आयोजित रक्तदान महायज्ञ में 1700 लोग भाग लेने आये, जिनमें से 1008 युवाओं ने रक्तदान कर प्रदेश में एक कीर्तिमान स्थापित किया। बताया गया कि इससे पहले प्रदेश में एक स्थान पर सर्वाधिक 600 यूनिट रक्तदान का रिकॉर्ड था, जो इस महायज्ञ में टूट गया।

इस महायज्ञ में प्रदेश की 9 ब्लड बैंक टीमों ने सहभागिता की। स्वशासी राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय सुल्तानपुर, आईएमए लखनऊ, केजीएमयू लखनऊ, प्रतापगढ़ मेडिकल कॉलेज, अयोध्या मेडिकल कॉलेज, अपैक्स हॉस्पिटल बनारस, बेली सप्रू हॉस्पिटल प्रयागराज, स्वरूप रानी हॉस्पिटल प्रयागराज का सहयोग मिला।

सुल्तानपुर में रक्तदाताओं को सम्मानित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

गायत्री परिवार के आह्वान पर संयुक्त सेवा समिति के माध्यम से अनेक समितियों ने इस महायज्ञ में सहयोग किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने सभी रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह ने सभी रक्तदाताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस सफल आयोजन में प्रभाकर सक्सेना, सरजू प्रसाद, गुड्डू सिंह, राकेश सिंह, अमित सिंह, संदीप सिंह, सोनू सिंह, आशीष, प्रखर सिंह, गौरव सिंह आदि प्रमुख रूप से सक्रिय रहे।

प्रांतीय अभियान एक दृष्टि में

दिनांक : 21 सितम्बर 2025
37 जिलों में आयोजित हुए शिविर
जिलेवार रक्तदान की यूनिट संख्या

सुल्तानपुर-1008, बुलंदशहर-220
आजमगढ़-74, बदायूँ-73
आगरा-65, खीरी लखीमपुर-62

झाँसी, गाजियाबाद, सहारनपुर, अमेठी, बलरामपुर और रायबरेली में 30 से 40 यूनिट के बीच रक्तदान

बरेली, प्रयागराज, फर्रुखाबाद, अयोध्या, गाजीपुर, कौशाम्बी, बलिया, अमरोहा, मुरादाबाद, हरदोई एवं फिरोजाबाद में 20 से 30 यूनिट रक्तदान हुआ

सम्मान और संकल्प

- इस अवसर पर, सुल्तानपुर में ब्लड बैंक की स्थापना के लिए प्रयास करने वाले लोगों को गायत्री परिवार सुल्तानपुर ने 'सुल्तानपुर के नींव के पत्थर' पुरस्कार से सम्मानित किया।
- रक्तदाता अभिषेक सिंह ने इस शिविर में अपना 43वाँ रक्तदान किया और 100 बार रक्तदान करने का संकल्प लिया।

रक्तदान करती अमेठी की युवतियाँ और फर्रुखाबाद में प.वं.माताजी को बहिनों की श्रद्धांजलि

जन्मभूमि आँवलखेड़ा में

जन्मभूमि आँवलखेड़ा में भी परम वंदनीया माताजी के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर आगरा जिले के 14 प्रज्ञा केन्द्रों में सामूहिक शक्ति संवर्द्धन गायत्री मंत्र जप एवं उसके उपरांत दीपयज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इन आयोजनों में 500 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल बनेगा विश्व का सबसे बड़ा आई केयर सेंटर

1000 बेड वाले सामुदायिक केन्द्र के निर्माण के लिए उप मुख्यमंत्री ने भूमि पूजन किया

मस्तीचक, सारण। बिहार

परम पूज्य गुरुदेव के अनन्य शिष्य एवं सहयोगी स्व. श्री रमेशचंद्र शुक्ला जी द्वारा स्थापित मानव सेवा के अद्वितीय केन्द्र अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल, मस्तीचक का असाधारण विस्तार हो रहा है। परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के अवतरण दिवस-20 सितम्बर को बिहार के उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी ने इस हॉस्पिटल के 1000 बैड वाले सामुदायिक केन्द्र के निर्माण के लिए भूमि पूजन किया। **इस अवसर पर अस्पताल के प्रबंधकों ने बताया कि यह अस्पताल दुनिया का सबसे बड़ा आई केयर सेंटर होगा।** इसके 2027 तक बन कर तैयार हो जाने की संभावना है। इस अस्पताल में शंकरा आई फाउण्डेशन, यूएसए का मुख्य सहयोग रहेगा।

निर्माणाधीन अस्पताल में 19 ऑपरेशन थिएटर और 50 नेत्र परीक्षण कमरे होंगे। जिस भवन की नींव रखी गई है, वहाँ केवल निःशुल्क सर्जरी की सुविधा उपलब्ध होगी। वर्तमान में चल रहे 500 बैड वाले अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल को सुपर स्पेशिएलिटी आई केयर सेवाओं से सुसज्जित किया जाएगा। ओपीडी की प्रतिदिन की क्षमता 700 से बढ़ाकर 1200 की जाएगी।

भूमिपूजन करते उप मुख्यमंत्री माननीय श्री सम्राट चौधरी जी

अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल के सह संस्थापक एवं सीईओ श्री मृत्युंजय तिवारी ने बताया कि भोजपुर और भागलपुर में 50 हजार सालाना सर्जरी क्षमता वाले नवीन हॉस्पिटल स्थापित होंगे।

सरकार ने बढ़ाये सहयोग के हाथ

मुख्य अतिथि, उप मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी तथा सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कृष्ण कुमार मंटू ने इस विराट कार्य की सराहना करते हुए कहा कि बिहार जैसे राज्य में अखण्ड ज्योति आई हॉस्पिटल का कार्य अत्यंत सराहनीय व अनुकरणीय है। उप मुख्यमंत्री जी ने हॉस्पिटल के विस्तार के लिए राज्य सरकार की ओर से जमीन उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया।

आयोजन के अवसर पर हॉस्पिटल ट्रस्टी अतुल कुमार, एडवाइज़री बोर्ड चेयरमैन डॉ. राजवर्द्धन आजाद, मेडिकल डायरेक्टर डॉ. अजीत पोद्दार, बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री सुभाष पटवारी, महामंत्री श्री पशुपतिनाथ पाण्डेय, विमल जैन इत्यादि गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। श्री अभिषेक कुमार ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

30 वर्षों से पौधारोपण कर निभा रहे हैं उन्हें बड़ा करने की जिम्मेदारी

पर्यावरण प्रहरी

शाजापुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की मनोरमा सोनी और हरीश शर्मा शहर व आसपास के क्षेत्रों के लिए सच्ची प्रेरणा बने हुए हैं। मनोरमा सोनी 1994 से पौधे लगा रही हैं। उनके साथ हरीश शर्मा भी इस अभियान में लगातार जुड़े हुए हैं। दोनों न केवल पौधे लगाते हैं, बल्कि वर्षों तक उनकी देखरेख और सिंचाई कर उन्हें पेड़ बनाने का संकल्प भी निभा रहे हैं।

मनोरमा सोनी ने पौधारोपण की शुरूआत चामुंडा टेकरी से की थी। इसके बाद जिला पंचायत परिसर, सिद्धार्थ नगर, काशी नगर, आदर्श नवीन नगर, ज्योति नगर स्कूल सहित आसपास के गाँवों में भी पौधे लगाए। उनका कहना हैं कि केवल पौधे लगा देने से ही हमारा फर्ज पूरा नहीं होता, उनके संरक्षण का बीड़ा भी हमने ही उठाया। जहाँ लगाए गए पौधों को पानी देने वालों की व्यवस्था नहीं हो पाती, वहाँ वे स्वयं पहुँचकर पौधों की देखभाल करते हैं।

मनोरमा जी ने शहर की चीलर नदी पर स्थित 5 घाटों सहित शांति वन में भी पौधारोपण कर उन्हें पेड़ बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है। गायत्री परिवार की ओर से दोनों सदस्य सामाजिक स्तर पर भी सक्रिय रहते हैं। पौधारोपण के साथ-साथ यज्ञ, नशामुक्ति और जागरूकता परक अन्य कार्यक्रमों में भी योगदान दे रहे हैं।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

प्रसूति एवं स्त्री रोग सोसायटी संघ के राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष कार्यशाला का आयोजन

कानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार कानपुर द्वारा कानपुर में आयोजित भारतीय प्रसूति एवं स्त्री रोग सोसायटी संघ (FOGSI) के राष्ट्रीय अध्यक्षीय सम्मेलन में दिनांक 12 सितम्बर को आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी कार्यशाला का आयोजन किया गया। चर्चा विषय था 'आध्यात्मिक प्रसूति विज्ञान पीढ़ी को नया आकार दे रहा है।' महिला कल्याण एवं बाल पुष्टाहार राज्य मंत्री प्रतिभा शुक्ला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं। डॉ. वंदना पाठक (आयुर्वेदाचार्य), डॉ. मीरा अग्निहोत्री सहित अनेकों संगठनों से आए गणमान्य अतिथियों, महिला चिकित्सकों एवं 200 से अधिक छात्राओं तथा अध्यापिकाओं ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला का शुभारंभ शंखनाद, गायत्री मंत्र एवं देवावाहन के साथ हुआ। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, उत्तर प्रदेश की प्रांतीय संयोजिका डॉ. संगीता सारस्वत ने अपने उद्बोधन में शान्तिकुञ्ज द्वारा आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की जानकारी देते हुए गर्भस्थ शिशुओं को संस्कारवान बनाने की पद्धतियों पर विचार व्यक्त किए।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, उत्तर प्रदेश की प्रांतीय संयोजिका डॉ. संगीता सारस्वत महिला चिकित्सकों के राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए

जी.एस.वी.एम. मेडिकल कॉलेज की वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. सीमा द्विवेदी ने गर्भावस्था में अपनाए जाने वाले अभ्यास क्रम, आदर्श दिनचर्या, शिशु से संवाद आदि का महत्त्व बताया। डॉ. रश्मि भूषण, डॉ. नीतू मिश्रा, डॉ. प्रतिमा वर्मा ने शिशुओं में प्रतिभा के बीजारोपण, पोषक आहार इत्यादि विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। डॉ. प्रतिमा वर्मा ने मोबाईल रेडिएशन के दुष्प्रभावों से बचने पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. अमरनाथ सारस्वत ने यज्ञोपैथी, डॉ. वंदना पाठक ने आयुर्वेद, डॉ. सुरेखा दुबे ने होम्योपैथी एवं डॉ. अर्चना वर्मा ने योग से संबंधित चिकित्सकीय पद्धतियों के द्वारा गर्भवती हेतु समग्र स्वास्थ्य संवर्धन पर प्रेरणाप्रद विचार प्रस्तुत किए।

कार्यशाला में अनेक वरिष्ठ महिला चिकित्सकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच संचालन डॉ. संगीता सारस्वत एवं डॉ. सीमा द्विवेदी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वन विभाग की अनूठी पहल

करम पर्व पर वृक्षों को रक्षा सूत्र बाँधे और पौधा रोपण किया

चरही, हजारीबाग। झारखंड

विगत दो वर्षों से चरही वन विभाग के कर्मियों द्वारा पेड़-पौधों को बचाने के लिए अनूठी पहल की जा रही है। वे चरही ग्राम में मनाये जा रहे करम महोत्सव में लगातार ग्रामीणों के बीच पहुँचे, उनके साथ मांदर की थाप पर खूब नृत्य किया। फिर वन विभाग के प्रभारी वनपाल शैलेंद्र कुमार और सुनील कुमार ने ग्रामीणों को करम पूजा करने के साथ उन्हें प्रकृति के संरक्षण की प्रेरणा दी। सबने मिलकर करम के बड़े वृक्षों को रक्षा सूत्र बाँधे व उन्हें नहीं काटने की शपथ ली। इसके साथ ही कई तरह के पौधों का रोपण व वितरण भी किया गया।

पर्व की परंपरा

करम पर्व भाई-बहिन के प्रेम का प्रतीक है। उस दिन बहिनें करम पेड़ की बड़ी-बड़ी डालियाँ काटकर लाती, आँगन में रोपती और उसकी पूजा कर भाई की लम्बी उम्र की प्रार्थना करती हैं। इस वर्ष वन कर्मियों ने ग्रामीणों को गाँव में ही करम के पेड़ लगाकर उनकी पूजा करने की प्रेरणा दी, ताकि हरे-भरे पेड़ों को काटने की आवश्यकता न पड़े।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

नवयुग की क्रान्ति के लिए युवा जागरण

बस्तर संभाग में 3000 युवाओं का विराट सम्मेलन

जगदलपुर। छत्तीसगढ़

जगदलपुर में 14 सितंबर, 2025 को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के मार्गदर्शन में एक दिवसीय जन्मशताब्दी संभागीय युवा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें बस्तर संभाग के 7 जिलों से 3000 से अधिक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया, जो कि अनुमानित संख्या से कहीं अधिक थी। कार्यक्रम स्थल के सभी हॉल और बरामदे पूरी तरह से भर गए थे, और विलंब से आने वाले सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं को बाहर खड़े रहकर ही कार्यक्रम सुनना पड़ा। कार्यकर्ताओं का यह

जगदलपुर में आयोजित सम्मेलन में झलकता युवा उत्साह

उत्साह और समर्पण अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के प्रति उनके जोश को दर्शाता है।

कार्यशाला में जन्मशताब्दी की कार्य-योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई, उनके क्रियान्वयन की योजनाएँ बनाई गईं। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री किरण सिंह देव, सांसद श्री महेश कश्यप और महापौर श्री संजय पांडेय भी उपस्थित रहे। कार्यशाला की अभूतपूर्व सफलता को देखते हुए इसे प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के मार्गदर्शन में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

जन्मशताब्दी के लिए युवा वाहिनियों का गठन

लोरमी, मुंगेली। छत्तीसगढ़

गायत्री प्रज्ञापीठ, लोरमी में 21 सितम्बर को 'यूथ सुपर 100' कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जिले भर से 143 युवाओं ने भाग लिया। छत्तीसगढ़ प्रांत में युवा प्रकोष्ठ के सह समन्वयक श्री सुरेंद्र गुप्ता, संभाग प्रभारी श्री योगेश साहू, श्री राजेश देवांगन और सुश्री रोमा साहू ने जन्मशताब्दी संबंधी विविध विषयों पर उन सभी को मार्गदर्शन दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में गायत्री परिवार के इंद्रजीत ध्रुव, विश्राम सिंह सोरी, राजेंद्र ध्रुव, सुखराम साहू और अन्य कार्यकर्त्ताओं ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

लोरमी में आयोजित हुई युवा सुपर-100 कार्यशाला

डौंडीलोहारा, बालोद। छत्तीसगढ़

युवा प्रकोष्ठ बालोद के द्वारा गायत्री प्रज्ञापीठ डौंडीलोहारा में युवा कार्यशाला 'सुपर-100' का आयोजन किया गया। इसमें डौंडीलोहारा, बालोद, गुरुर, डौंडी, एवं गुण्डरदेरी के ब्लॉक समन्वयकों सहित 150 से भी अधिक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रांतीय युवा संयोजक श्री ओम प्रकाश राठौर एवं श्री चम्पेश्वर साहू ने सभी युवा क्रांतिकारियों को अत्यंत प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया। जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय स्तर पर अपनाई जाने वाली कार्ययोजना के क्रियान्वयन पर चिंतन, मनन हुआ।

दिया दिल्ली का विशेष व्यक्तित्व विकास सत्र

100 से अधिक विद्यार्थियों ने नवरात्र साधना अनुष्ठान करने का संकल्प लिया

मुखर्जी नगर। नई दिल्ली

विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा प्राप्त कर रहे युवा बहुल क्षेत्र, मुखर्जी नगर में 'दिया' दिल्ली के द्वारा संचालित युवा चेतना केन्द्र ने 19 से 21 सितम्बर की तिथियों में तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास सत्र आयोजित किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह, श्री अखिलेश पाण्डेय, कोयला मंत्रालय में ओएसडी एवं केन्द्र संचालक श्री मनीष कुमार ने युवा वर्ग एवं वर्तमान चुनौतियाँ, मूल्य आधारित चरित्र निर्माण का महत्त्व, राष्ट्रसेवा में युवाओं का योगदान, योग एवं समग्र स्वास्थ्य इत्यादि विषयों पर प्रेरक एवं रोचक मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्हें गायत्री परिवार के उद्देश्य एवं कार्यक्रमों से अवगत कराकर बेहतर जीवन के लिए इन कार्यक्रमों से नियमित रूप से जुड़ने की प्रेरणा दी गई।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का आध्यात्मिक जीवन शैली की उपयोगिता पर प्रकाश डालने वाला वीडियो संदेश और ध्यान साधना बहुत प्रभावशाली थे। लगभग 100 प्रतिभागियों ने नवरात्रि अनुष्ठान करने का संकल्प लिया। सभी प्रतिभागियों को शान्तिकुञ्ज आने का निमंत्रण दिया गया।

प्रबुद्ध युवाओं में जीवन साधना की रुचि जगाते आशीष सिंह, अखिलेश पाण्डेय और मनीष कुमार

वात्सल्यग्राम में ज्योति कलश रथयात्रा का स्वागत

मथुरा। उत्तर प्रदेश : प्रखर प्राण चेतना की संवाहक अखण्ड दीप की शताब्दी के उपलक्ष्य में गाँव-गाँव पहुँच रहे ज्योति कलश रथ का वात्सल्य ग्राम, मथुरा में भव्य स्वागत हुआ। युगऋषि की जन्मभूमि आँवलखेड़ा से आरंभ होकर यह ज्योति कलश गायत्री तपोभूमि मथुरा होते हुए वात्सल्य ग्राम पहुँचा, जहाँ साध्वी सत्यव्रता एवं स्वामी आलोकानन्द जी ने उसका भावभरा पूजन किया। स्वागत समारोह में वात्सल्य ग्राम प्रबंधक राजेश कुमार पाण्डेय, बाल चतुर्वेदी, कैप्टन हरिहर शर्मा, रंगनाथ सोनी, बहिन वन्दना, रेणु, आरती, अंजलि आदि उपस्थित हुए।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

ओडिशा का प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह

भुबनेश्वर। ओडिशा

गायत्री परिवार भुबनेश्वर के द्वारा युगशक्ति गायत्री भवन, रसूलगढ़ में वर्ष 2024 का भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पाँचवीं कक्षा से महाविद्यालय स्तर के हर वर्ग में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले 27 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रांत के उच्च शिक्षा निदेशक श्री काली प्रसन्न महापात्र जी एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के केंद्रीय संयोजक श्री रामयश तिवारी जी ने पुरस्कार स्वरूप उन्हें नकद धनराशि, ट्रॉफी एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये।

श्री काली प्रसन्न महापात्र, उच्च शिक्षा निदेशक ने कहा कि भारतीय संस्कृति में महामानव गढ़ने के अनेक सूत्र समाहित हैं, जिन्हें जीवन में उतार कर स्वयं को हीरे जैसा अनमोल बनाया जा सकता है।

श्री रामयश तिवारी, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के केंद्रीय समन्वयक ने व्यक्तित्व को संस्कारवान बनाने एवं उज्ज्वल चरित्र के निर्माण हेतु संस्कृति में निहित दुर्लभ ज्ञान का वर्णन किया। श्री कमल लोचन साहू ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के

सम्मानित गणमान्यों के साथ प्रांत में विभिन्न वर्गों में अग्रणी रहे विद्यार्थी

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान से सम्मानित हुए 10 शिक्षकगण

इस पुरस्कार वितरण समारोह में सोनपुर के सहारा ट्रस्ट हाइस्कूल को सर्वश्रेष्ठ विद्यालय का पुरस्कार मिला। 10 जिलों से चुने गए 10 शिक्षकों को पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। गंजाम, केंदुझर और कोरापुट को सर्वश्रेष्ठ जिले के रूप में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

महत्त्व एवं चहुमुखी प्रभाव के संबंध में विचार व्यक्त किए। उन्होंने अधिक से अधिक विद्यालयों तक इसे पहुँचाने का आह्वान किया।

पुरस्कार वितरण समारोह में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं गायत्री परिजनों ने भाग लिया। प्रांतीय संयोजक श्री प्रफुल्ल चंद्र दास ने अतिथियों का स्वागत किया एवं डॉ. रजत कुमार षडंगी जी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

भासंज्ञाप. में सहयोगी 400 शिक्षकों का सम्मान

गायत्री परिवार के द्वारा बच्चों में गुण और संस्कार संवर्धन के लिए किया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है।

- श्री टंकराम वर्मा, उच्च शिक्षा, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ, समता कॉलोनी, रायपुर के द्वारा दिनांक 17 सितम्बर को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में विशेष योगदान देने वाले 400 शिक्षकों एवं प्राचार्यों को सम्मानित किया गया। रायपुर, आरंग, धरसींवा, अभनपुर ब्लॉक से आए ये वे शिक्षक थे, जो रविवार के दिनों में भी विद्यालय आकर बच्चों को भासंज्ञाप के पाठ्यक्रम के साथ नैतिकता एवं सदाचार का पाठ पढ़ाते थे। सभी शिक्षकों को गायत्री मंत्र उत्तरीय, प्रमाण पत्र, प्रतीक चिह्न एवं प्रज्ञा साहित्य प्रदान किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राज्य के उच्च शिक्षा, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री टंकराम वर्मा जी एवं योग आयोग के अध्यक्ष श्री रूपनारायण सिन्हा जी उपस्थित हुए। माननीय मंत्री जी ने

शिक्षकों को सम्मानित करते माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री वर्मा जी

गायत्री परिवार द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों एवं भा.सं. ज्ञान परीक्षा से जुड़े शिक्षकों के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि शिक्षा तो हमें बड़े-बड़े संस्थानों से भी मिल जाती है, लेकिन गायत्री परिवार के द्वारा बच्चों में गुण और संस्कार संवर्धन के लिए किया जा रहा कार्य प्रशंसनीय है। योग आयोग के अध्यक्ष श्री सिन्हा ने गायत्री परिवार को बधाई देते हुए कहा कि आज देश-विदेश के समाज को एक सूत्र में पिरोने का वंदनीय कार्य गायत्री परिवार के द्वारा किया जा रहा है।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री एस.एन. राय ने किया। जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय संयोजक श्री श्याम बैस, प्रांतीय सचिव सदाशिव हथमल, जिला संयोजक रामपाल तिवारी, जिला समन्वयक लच्छू राम निषाद, समस्त ट्रस्टीगणों सहित बड़ी संख्या में गायत्री परिजन इस सम्मान समारोह में उपस्थित हुए।

शिक्षक सम्मेलन

देव संस्कृति के पुनर्जागरण में शिक्षकों की भूमिका

भागीचक, जमालपुर, मुंगेर। बिहार

परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर दिनांक 7 सितम्बर को गायत्री शक्तिपीठ, भागीचक में 'देव संस्कृति के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर एक कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर परम वंदनीया माताजी को अपने मातृत्व एवं व्यक्तित्व से लाखों व्यक्तियों को जीवन जीने की कला सिखाने वाली आदर्श गुरुमाता के रूप में वर्णित करते हुए श्रद्धांजलि दी गई।

मुख्य अतिथि के रुप में माध्यमिक शिक्षक संघ के पूर्व सचिव नवल किशोर सिंह थे। उन्होंने कहा, ''चाणक्य और नागार्जुन जैसे आचार्यों ने विश्व मानवता को दिव्य देव संस्कृति से आलोकित किया था, वही कार्य वर्तमान में पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माताजी ने किया है।''

उपजोन प्रतिनिधि मनोज मिश्र ने कहा कि देव संस्कृति के पुनर्जागरण से ही मूल्यनिष्ठ समाज और श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण संभव है। शिक्षिका सविता शर्मा, दिनकर फांउडेशन के एडवोकेट सुनील सिंह, शिक्षक शालिग्राम सिंह एवं शिक्षिका अनीता देवी ने गायत्री परिवार के देव संस्कृति दिग्विजय अभियान, पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के विचारों की सटीकता एवं प्रखरता पर अपने विचार व्यक्त किए।

सच्चे प्यार में लेने की चाह नहीं होती, मात्र दिया ही जाता है। सेवा-सहायता ही ध्यान में रहती है, स्वार्थ सिद्धि का प्रलोभन तो फटकने भी नहीं पाता।

श्राद्ध पक्ष में युग संस्कार परम्परा से लाखों लोगों ने किया पितरों को नमन

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा पूरे देश में शक्तिपीठों और विभिन्न प्रज्ञा केन्द्रों पर पितृ पक्ष में सामूहिक श्राद्ध-तर्पण संस्कार के सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सर्वपितृ अमावस्या के दिन देशभर के लाखों श्रद्धालुओं ने गायत्री परिवार के भावपूर्ण विधि-विधान को अपनाते हुए अपने दिवंगत पितरों को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनसे आशीर्वाद माँगा। इस संस्कार परम्परा में यज्ञ, तर्पण और पौधारोपण जैसे सत्कर्मों को सर्वश्रेष्ठ श्राद्धकर्म बताया गया।

श्री विजयापुर

बारां

पांढुरना

हैदराबाद

झांसी

लोकप्रिय वार्षिक आयोजन बन गया

11 कुण्डीय महायज्ञ के साथ 400 लोगों ने किया श्राद्ध-तर्पण

श्री विजयपुरम (पोर्ट ब्लेयर)। अंडमान निकोबार

श्री विजयपुरम में सन् 2016 में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की उपस्थिति में आयोजित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सामूहिक श्राद्ध तर्पण संस्कार परम्परा की एक नई शुरुआत की गई थी। इस परम्परा ने स्थानीय लोगों को बहुत आकर्षित किया। तब से सर्वपितृ अमावस्या एवं श्राद्धपक्ष के अन्य दिनों में यह कार्यक्रम हर वर्ष आयोजित किया जाता है। अब तो इस कार्यक्रम ने श्री विजयपुरम के एक लोकप्रिय वार्षिक आयोजन का रूप ले लिया है।

इस वर्ष भी सर्वपितृ अमावस्या के दिन यह संस्कार भव्य कलश यात्रा से युक्त 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ आयोजित किया गया। शहर के गणमान्य व्यक्तियों सहित लगभग 400 लोगों ने इसमें भाग लिया। भाई सुरेश श्रीवास्तव, बहन सपना मिस्त्री, पार्वती और रेवती ने कार्यक्रम का संचालन किया। गायत्री चेतना केंद्र ने सभी पूजन सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराई।

कार्यक्रम स्थल पर एलईडी स्क्रीन के माध्यम से डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के प्रवचन और शान्तिकुञ्ज तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय पर आधारित वीडियो भी दिखाए गए। इस आयोजन की व्यवस्था, जिसमें भोजन प्रसाद भी शामिल था, ने सभी को प्रभावित किया। उपस्थित परिजनों ने इस अद्भुत आयोजन के लिए गुरुदेव और माताजी का हृदय से आभार व्यक्त किया।

अदृश्य सहायक-पितरों को नमन

पांढुरना। मध्य प्रदेश :

औद्योगिक क्षेत्र बोरगाँव के भगवती सेलिब्रेशन हॉल में गायत्री परिवार बोरगाँव ने सौंसर शक्तिपीठ के मार्गदर्शन में पितृ तर्पण एवं पिंडदान संस्कार का आयोजन किया। सौंसर शक्तिपीठ के पंडित नरेंद्र देव हिंगवे ने गुरुदेव की पुस्तक 'पितर हमारे अदृश्य सहायक' का उल्लेख करते हुए बताया कि तर्पण से पितर संतुष्ट होकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं। इस आयोजन में बोरगाँव, धोतकी, वाघोड़ा सहित आस-पास के गाँवों से 175 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

पौधारोपण को बताया सर्वश्रेष्ठ श्राद्धकर्म

बारां। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार की बारां शाखा द्वारा सर्व पितृ अमावस्या के अवसर पर मनिहारा महादेव तालाब पर विशाल श्राद्ध तर्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। बड़ी संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने इसमें भाग लेकर अपने पितरों का तर्पण किया। तालाब के किनारे श्राद्ध तर्पण का दृश्य अद्भुत और अत्यंत मनभावन था।

घनश्याम गौतम, धर्मेंद्र यादव, चंद्रप्रकाश सांखला और डॉ. मुकेश मीणा की टीम ने यह संस्कार संपन्न कराया। यहाँ दिवंगत पूर्वजों के तर्पण-पिण्डदान के साथ-साथ देव तर्पण, ऋषि तर्पण, दिव्य पितृ तर्पण और भीष्म तर्पण भी कराया गया, जिसने संस्कार कराने वालों को अत्यधिक प्रभावित किया।

गायत्री परिवार के पुरोहितों ने बताया कि पितरों के प्रति सच्ची श्रद्धा और सेवा का भाव रखना ही सबसे बड़ा श्राद्ध कर्म है। उन्होंने पितरों के निमित्त किए गए पौधारोपण-वृक्षारोपण को भी उत्तम श्राद्धकर्म बताया, जो पूरे समाज की सेवा के लिए किया जाता है।

पाँच पारियाँ-500 श्रद्धालु

झाँसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ आतिया तालाब, झाँसी में नित्य तर्पण संस्कार सम्पन्न किए गए, जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। सर्वपितृ अमावस्या के दिन पाँच पारियों में 500 से अधिक लोगों ने दिवंगत पूर्वजों का तर्पण कर भाव सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर हजारों रुपये का प्रज्ञा साहित्य भी निःशुल्क वितरित किया गया।

गौ सेवा के लिए अनुदान

जियागुड़ा, हैदराबाद। तेलंगाना

गायत्री परिवार हैदराबाद के द्वारा कामधेनु गौशाला, जियागुडा में प्रतिदिन तर्पण संस्कार सम्पन्न हुए। श्राद्ध पक्ष के अंतिम दिन लगभग 200 श्रद्धालुओं ने अपने पितरों का श्राद्ध-तर्पण किया। गायत्री परिवार के प्रतिनिधि ने कहा कि दिवंगत पितरों की स्मृति में जो सेवा और सत्कर्म के कार्य किए जाते हैं, वही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। श्रद्धालुओं द्वारा सामूहिक रूप से गौ सेवा हेतु 1,11,000 रुपये का अंशदान दिया गया। कार्यक्रम के समापन पर परिजनों ने व्यसन मुक्ति का संकल्प लिया।

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार पूरनपुर ने माता भगवती देवी गौशाला तथा नगर स्थित कार्यालय में सामूहिक श्राद्ध-तर्पण संस्कार आयोजित किए। गौशाला के व्यवस्थापक श्री अनन्तराम पालिया ने बताया कि इस बार कई ऐसे लोग भी शामिल हुए, जो इस तर्पण विधि से पहले अनभिज्ञ थे। तर्पण संस्कार के बाद सामूहिक यज्ञ और भण्डारे का आयोजन भी किया गया।

शक्तिपीठ पर उमड़ी आस्था

मोहाली। पंजाब

सर्वपितृ अमावस्या के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ (फेज-1) मोहाली में श्रद्धालुओं का भारी सैलाब उमड़ पड़ा। बड़ी संख्या में लोगों ने अपने दिवंगत पूर्वजों की आत्मिक शांति, सद्गति और तृप्ति के लिए सामूहिक तर्पण एवं पिंडदान संस्कार किया। श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति को देखते हुए शक्तिपीठ प्रबंधन को 35-35 लोगों की दो पारियों में संस्कार सम्पन्न कराना पड़ी। इसके बाद भी कई लोग शेष थे, जिनके लिए अलग से पारी करानी पड़ी। सबने अपने पितरों को श्रद्धांजलि देने के साथ समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान के संकल्प लिये।

मध्य प्रदेश में विशाल संस्कार समारोह

इंदौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केशर बाग इंदौर में श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन निःशुल्क सामूहिक तर्पण संस्कार का आयोजन हुआ। सैकड़ों परिजनों ने इसमें भाग लेकर अपने पितरों का श्रद्धा और प्रेमभाव के साथ तर्पण किया। लोगों ने अपने दिवंगत स्वजनों को जलांजलि अर्पित करने के अलावा अज्ञात अतृप्त आत्माओं, गर्भ में ही दिवंगत शिशुओं, शहीद सैनिकों और दुर्घटनाओं में मृत व्यक्तियों का तर्पण किया। संस्कार कराने वाले गुलाबराव ने लोगों को बताया कि सच्चे मन से किया गया तर्पण पितरों के प्रति सम्मान प्रकट करता है और उनके सद्गुणों तथा सत्कर्मों को याद करने से व्यक्ति अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित होता है।

इस विशेष संस्कार समारोह में लोक सेवा आयोग, मध्य प्रदेश के पूर्व सदस्य श्री एन.सी. नागराज सहित कई गणमान्यों ने अपने पितरों की तृप्ति के लिए जलांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सजल तिवारी, जे.पी. यादव, कैलाश वर्मा, रामबक्श राजपूत, नवल सिंह, महेश पंवार, श्रीमती पूनम त्रिपाठी और श्रीमती महेश कनाडे भी उपस्थित थे।

गायत्री शक्तिपीठ इंदौर में पितरों का तर्पण करते परिजन

रायपुरिया, झाबुआ। मध्य प्रदेश

झाबुआ के ग्राम रायपुरिया में पम्पावती नदी के किनारे स्थित राम मंदिर परिसर सभा मंडपम् में पहली बार पितृमोक्ष अमावस्या पर सैकड़ों लोगों ने सामूहिक श्राद्ध-तर्पण किया। इंदौर से पधारे श्री दलबीर सिंह चौधरी जी ने तर्पण संस्कार कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने लोगों को गायत्री परिवार के विभिन्न अभियानों तथा जन्म शताब्दी के कार्यक्रमों की जानकारी भी दी। गायत्री मंत्र के स्टिकर्स निःशुल्क बाँटे गए।

आयोजन स्थल को आम्र पल्लव, केले के वृक्षों तथा पुष्प मालाओं से आकर्षक ढंग से सजाया गया था। इससे पूर्व गायत्री परिजनों ने घर-घर जाकर लोगों को पीले चावल देकर कर इस संस्कार समारोह का लाभ लेने के लिए आमंत्रण दिया।

साली टांडा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ साली टांडा में नित्य श्राद्ध-तर्पण संस्कार सम्पन्न हुए, जिसका प्रतिदिन सैकड़ों लोगों ने लाभ लिया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड, हिमाचल, पंजाब में आई प्राकृतिक आपदाओं में दिवंगत हुए लोगों का तर्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वनवासियों के आदर्श स्व. डेमनिया बाबा को भी जलांजलि अर्पित की गई। तर्पण संस्कार डॉ. अनूप जरे, नानला काका की टोली ने विधि-विधानपूर्वक सम्पन्न करवाया। संस्कार के पश्चात् सभी ने डेब नदी में जाकर पिंडों का विसर्जन किया।

गायत्री शक्तिपीठ साली टांडा में हो रहा श्राद्ध तर्पण संस्कार

शान्तिकुञ्ज की राष्ट्रीय स्वच्छता सेवा पखवाड़े में भागीदारी

2 किलोमीटर गंगा तट की सफाई की

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के हजारों साधक, स्वयंसेवकों ने नवरात्र साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति के पश्चात् देशभर में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक मनाए जा रह स्वच्छता सेवा पखवाड़े में भाग लेते हुए गंगातट पर श्रमदान किया। वे माँ गंगा की सफाई को भी अपनी नवरात्र साधना का अंग मानते हुए बड़ी श्रद्धा और तन्मयता के साथ सफाई अभियान में जुटे रहे।

स्वच्छता अभियान 1 अक्टूबर 2025 को दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक चला। कुल दो किलोमीटर की लम्बाई पर स्थिति 20 घाटों को 7 सेक्टरों में विभाजित कर सफाई की गई। तीन घण्टों में तटों पर बिखरे प्लास्टिक, पूजा सामग्री के अवशेष और अन्य कूड़े को व्यवस्थित रूप से हटाकर घाटों को निर्मल किया। इस सफाई अभियान में निकले कई टन कूड़े कचरे को बाद में नगर पालिका ने उचित स्थान पर पहुँचाया।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेंद्र गिरी जी सहित सभी वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने स्वच्छता श्रमदान के कार्यक्रम का नेतृत्व किया। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्ग और महिलाएँ माँ गंगा की सेवा के भाव से बड़ी श्रद्धापूर्वक स्वच्छता अभियान में जुटे रहे। श्री योगेंद्र गिरी जी ने इस श्रद्धाभाव को नमन करते हुए सभी का उत्साहवर्धन किया।

सेवा-स्वच्छता भी उच्च कोटि की साधना है

श्रद्धेया शैल जीजी ने स्वच्छता अभियान में संलग्न समस्त परिजनों की उत्कृष्ट भावनाओं का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि सेवा-स्वच्छता भी उच्च कोटि के साधना है। यह एक ऐसा आध्यात्मिक गुण है, जिससे ईश्वर की प्राप्ति होती है।

निर्मल गंगा जन अभियान

निर्मल गंगा जन अभियान शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में पूरे देश में गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे रचनात्मक कार्यक्रमों में से एक प्रमुख आन्दोलन है। देश की नदियों के साथ समस्त जलस्रोतों-तालाब, कुएँ आदि की स्वच्छता, शुद्धता के लिए योजनाबद्ध कार्य किया जा रहा है। जल शुद्धि, तट शुद्धि और पर्यावरण शुद्धि के लिए सामूहिक स्वच्छता-श्रमदान एवं जनजागरूकता अभियान के अनेक प्रकार के कार्यक्रम निर्मल गंगा जन अभियान के अंतर्गत चलाये जाते हैं।

आलसी का शरीर सौष्ठव और बुद्धिबल दोनों ही नष्ट होते हैं। काम से जी चुरा लेने वाले अपना स्वास्थ्य गँवा बैठते हैं। वे अनेक रोगों से ग्रसित होते और कुरूप दिखते हैं।

विचार क्रान्ति अभियान के विविध रूप

राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भागीदारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इन्दिरा नगर, लखनऊ ने नगर में आयोजित 11 दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित विपुल साहित्य का स्टॉल लगाया। लखनऊ के इस प्रतिष्ठित पुस्तक मेले में महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनन्दी बेन पटेल, माननीय उप मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक के अतिरिक्त अनेक मंत्री, विधायक, सांसद, आईएएस, आईपीएस अधिकारी, अमर उजाला के सम्पादक श्री विजय त्रिपाठी, दैनिक जागरण के सम्पादक श्री आशुतोष शुक्ला, नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री सुधीर मिश्रा, लोकमत के सम्पादक श्री आनन्द वर्धन के अतिरिक्त कवि, चिन्तक, विद्यार्थी, अभिभावकगण, अध्यापकगण एवं हजारों नगर निवासियों का आगमन हुआ। आगंतुकों ने अत्यंत रुचिपूर्वक युगऋषि द्वारा रचित पुस्तकों का अवलोकन एवं क्रय किया। विशिष्ट अतिथियों को भेंट स्वरूप प्रज्ञा साहित्य प्रदान किया गया।

राज्यपाल, जनप्रतिनिधि, पत्रकार, लेखक, बुद्धिजीवी, विद्यार्थी आदि प्रत्येक वर्ग के हजारों लोग परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी से लाभान्वित हुए

गायत्री परिवार के साहित्य पटल में माननीय राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल और माननीय उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य

गायत्री ज्ञान मंदिर द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भागीदारी की जाती है। इसमें ज्ञानयज्ञ से प्रतिदिन हजारों बुद्धिजीवी, विद्यार्थी एवं महिलाएँ लाभान्वित होते हैं। इस वर्ष लगातार 36वें वर्ष भागीदारी हुई। पुस्तक मेले के संयोजक श्री उमानन्द शर्मा को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

बांग्ला अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन

सिलीगुड़ी। पश्चिम बंगाल : गायत्री शक्तिपीठ सिलीगुड़ी में 14 सितम्बर को बांग्ला अखण्ड ज्योति पत्रिका पाठक सम्मेलन हुआ। इसमें शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री विजय अग्रवाल ने कहा कि मिशन की पत्रिकाएँ लोगों तक गुरुदेव के विचारों को पहुँचाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम हैं। अतः हमें अखण्ड ज्योति पत्रिका के पाठकों की संख्या कई गुना करने के प्रयास करने होंगे।

कोलकाता स्थित बांग्ला प्रकाशन केन्द्र के प्रतिनिधि श्री संजीव बनर्जी ने पूज्य गुरुदेव के जीवनदर्शन एवं युग निर्माण योजना की महत्ता पर प्रेरणाप्रद विचार प्रस्तुत किए। पत्रिका प्रकाशन केन्द्र के श्री सुनील लाहोटी ने गुरुदेव के साहित्य की विशेषताएँ बताते हुए सभी को शान्तिकुञ्ज आने का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री निलय मजूमदार ने किया।

जन्मशताब्दी का एक सशक्त आन्दोलन बन गया है पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

दिवंगत पति की स्मृति में पहुँचायेंगे 100 घरों में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

कुरुद, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ कुरुद की कर्मठ कार्यकर्त्ता श्रीमती साधना देवांगन द्वारा अपने दिवंगत पति स्वर्गीय श्री शेषनारायण देवांगन की पुण्य स्मृति में 100 प्रतियाँ पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के वितरण का संकल्प लिया गया है। वे पूरे कुरुद ब्लॉक में ट्रस्टी गणों, इकाई प्रमुखों एवं अन्य वरिष्ठ लोगों को प्रज्ञा अभियान की प्रतियाँ भेंट कर उन तक गुरुदेव का संदेश एवं शान्तिकुञ्ज की गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध कराने का प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय प्रयास कर रही हैं। इस अवसर पर सामूहिक गायत्री मंत्र जप एवं युगनिर्माण सत्संकल्प पाठ भी किया गया। जिला समन्वयक दिलीप नाग ने बताया कि धमतरी जिले में परिजनों को साहित्य विस्तार के लिए निरंतर प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जा रहा है।

स्थानीय गायत्री परिवार की दिवंगत सदस्या स्वर्गीय श्रीमती ओम कुमारी कंवर ने मृत्यु से पूर्व 25 प्रज्ञा अभियान वितरित करने का संकल्प लिया था। इस अवसर पर उनकी स्मृति में 25 प्रज्ञा अभियान वितरित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्रीमती साधना देवांगन द्वारा प्रज्ञा अभियान का वितरण

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के प्रयाज में गाँव-गाँव, घर-घर पहुँच रहा है गुरुवर का संदेश व आमंत्रण

बालोद। छत्तीसगढ़

बालोद में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का प्रयाज पूरी गति से चल रहा है। गाँव-गाँव में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की प्रतियाँ वितरित की जा रही हैं, ताकि सभी तक 108 कुण्डीय महायज्ञ का आमंत्रण, पूज्य गुरुदेव का संदेश एवं गायत्री परिवार द्वारा पूरे विश्व में चल रहे जन-जागरण अभियानों की जानकारी एक साथ लोगों तक पहुँचाई जा सके। इसके माध्यम से गायत्री परिजन 'ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने हम घर-घर में जाएँगे' के उद्घोष को चरितार्थ रहे हैं।

विद्यालयों में प्रज्ञा अभियान वितरण

दुर्ग। छत्तीसगढ़ : विद्यालयों में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए विशेष रूप से समर्पित दिया छत्तीसगढ़ ने अब विद्यार्थियों में प्रज्ञा अभियान का वितरण आरंभ कर दिया है। इस क्रम में शा.उ.मा. विद्यालय उरला में शिक्षिका श्रीमती अंजना साहू ने प्रज्ञा अभियान की प्रतियों बच्चों में वितरित कीं। उन्होंने इसे विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में सहायक पत्रिका बताया। विद्यालय प्रबंधन ने इस पहल का स्वागत किया है।

शा.उ.मा. विद्यालय उरला

गाँवों के आदर्श विकास के प्रशंसनीय प्रयास

नवागढ़, बेमेतरा। छत्तीसगढ़

ब्लॉक नवागढ़ के ग्राम अकोली में जन्मशताब्दी युवा कार्यशाला 2025 की समीक्षा गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें विभिन्न गाँवों से आए अश्विनी कुमार बघेल, मनोहर लाल साहू, सरपंच रोहित निषाद सहित गणमान्य नागरिकों ने अपने गाँवों के आदर्श विकास के लिए संकल्प ही नहीं लिये, उसके लिए प्रशंसनीय प्रयास भी किये। समीक्षा गोष्ठी में प्रत्येक गाँव तक मिशन का संदेश पहुँचाने की योजनाओं पर कार्य हुआ। सद्वाक्यों के 300 फ्लैक्स बनवाकर विभिन्न गाँवों के मंदिरों, पंचायत भवनों, स्कूलों में लगाए गए।

नशा मुक्ति रैली : अकोली में ग्राम पंचायत सरपंच, पंच, स्वयं सहायता समूह की बहिनों, भाईयों एवं ग्रामीण लोगों को लेकर गाँव में नशा मुक्ति रैली निकाली गई। रैली में छत्तीसगढ़ी नशा मुक्ति लोकगीतों के गायन द्वारा लोगों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया।

वृक्ष गंगा अभियान को भी दिया प्रोत्साहन

क्षेत्र में वृक्ष गंगा अभियान को लेकर भी एक रैली निकाली गई। सभी ने सामुदायिक भवन, तालाब एवं खेतों के किनारों पर अनेकों पौधों का रोपण किया। प्रज्ञा गीतों के माध्यम से जनजागरण का कार्य किया गया।

11 बाल संस्कारशालाएँ

बेमेतरा क्षेत्र में वर्तमान में 11 बाल संस्कार शालाएँ संचालित हो रही हैं। ग्राम तेंदुआ, मल्दा, धेबघट्टी, चिचोली, कांपा, टेमरी, तिलाईकूड़ा, खिलोरा इत्यादि क्षेत्रों में बहुत बड़ी संख्या में बच्चों के अंदर नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक गुणों का बीजारोपण किया जा रहा है। बच्चों को प्रार्थना, वंदना, जप, ध्यान, भू नमन, हस्त दर्शन, स्वस्थ जीवन, मानवीय गरिमा, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग, योग एवं विभिन्न क्रीड़ाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। सतत आगे बढ़ने का प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। इन कार्यशालाओं के संचालन में कुलदीप वर्मा, अंगद निषाद, इंद्र कुमार वर्मा, बलराम साहू, अनिल भाई इत्यादि परिजनों का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

एक माह में 10 कार्यक्रम हुए

अगस्त माह में 10 से अधिक विद्यालयों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नशा मुक्ति के लिए अत्यंत प्रभावशाली कार्यक्रम किये गए। इनमें गीत, नुक्कड़ नाटक, वीडियो संदेश सहित रैलियों इत्यादि के द्वारा समाज में फैली कुरीतियों एवं नशे के विरुद्ध जागरूकता जगाई जा रही है। कार्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों एवं ग्रामीणों को स्वयं नशामुक्त रहने एवं दूसरों को भी प्रेरित करने का संकल्प दिलवाया जाता है। इन आयोजनों में मिलाप कुमार साहू, बलराम साहू, बहिन मनीषा निषाद, कुसुम वर्मा, साहोद्रा, पायल, गोमती, सुरेंद्र कुमार वर्मा, महेंद्र कुमार साहू, सुरेंद्र कुमार साहू जी की मुख्य भूमिका रही।

3000 वृक्षों की पौध लगाई, लक्ष्य-5000

धमतरी। छत्तीसगढ़ : प्रदूषण मुक्त पर्यावरण एवं स्वस्थ नीरोग जीवन की प्राप्ति हर जीव का मौलिक अधिकार है, इस उद्देश्य से गायत्री परिवार धमतरी के प्रयास से पूरे जिले में 3000 से अधिक पौधों का रोपण किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष जिले में 5000 पौधों के रोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत धमतरी ब्लॉक में 550, कुरुद में 650, मगरलोड में 550, नगरी में 600 एवं भखारा ब्लॉक में लगभग 650 पीपल, बरगद, आम, नीम, तुलसी, आँवला, अशोक, चंदन, जाम, सहजन, पपीता एवं अन्य उपयोगी पौधों का रोपण किया गया।

जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने बताया कि पौधों के रोपण के साथ-साथ उनकी सुरक्षा की भी पूरी व्यवस्था की जा रही है। इस अभियान में क्षेत्रीय नागरिकों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है।

दिया, छत्तीसगढ़ का नशामुक्ति अभियान

शिक्षण संस्थानों में जा कर किशोरों और युवाओं को दे रहे हैं संदेश

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय में भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

19 सितंबर 2025 को समाज कल्याण विभाग, गायत्री परिवार और कल्याणी नशा मुक्ति केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 'नशा मुक्त भारत' कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायत्री परिवार की युवा इकाई 'दिया' के संयोजक डॉ. पी.एल. साव और कल्याणी नशा मुक्ति केंद्र के संचालक श्री अजय कल्याणी इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे।

डॉ. साव ने कहा कि यदि युवा नशे से मुक्त रहकर अपनी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगाते हैं, तो देश उन्नति और प्रगति की नई ऊँचाइयों को छुएगा। नशा केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को कमजोर करता है, इसलिए इसकी रोकथाम में युवाओं की सक्रिय भागीदारी बहुत जरूरी है।

श्री अजय कल्याणी ने नशे के दुष्प्रभावों और साइबर अपराध से बचाव के उपायों की जानकारी दी। इस दौरान, डॉ. योगेन्द्र कुमार ने सभी विद्यार्थियों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में 150 से अधिक एन.सी.सी. कैडेट्स सहित महाविद्यालय के सदस्यों ने भाग लिया। इस अभियान को सफल बनाने में समाज कल्याण विभाग के श्री जंतराम ठाकुर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पेंड्रा गौरेला। छत्तीसगढ़

'दिया' छत्तीसगढ़ ने दिनांक 11-12 सितम्बर में जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टीकर गौरेला, उत्तर माध्यमिक विद्यालय कोरजा एवं गौरेला कोरजा में नशा मुक्ति जन जागरण कार्यक्रमों का आयोजन किया। इनमें बड़ी संख्या में शिक्षक तथा छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। आनंद कुमार साहू ने विद्यार्थियों को जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाने एवं नशामुक्त जीवन जीने की बहुमूल्य प्रेरणाएँ दीं। सभी को आजीवन नशा न करने का संकल्प दिलाया गया।

अगस्त-सितम्बर में 5000 से अधिक युवाओं तक नशा मुक्ति का संदेश पहुँचाया।

जिले का 'दिया' संगठन विद्यार्थियों को नशे से बचाने के लिए विद्यालयों में कार्यक्रमों की सतत शृंखला चला रहा है। इसके अंतर्गत जिला संयोजक श्रीमती कंचन सिंह, 'दिया' छत्तीसगढ़ के प्रांत सहसंयोजक ओमप्रकाश बलभद्र के नेतृत्व में बड़ी संख्या में गायत्री परिजन इस अभियान को गति प्रदान करने में दिन रात जुटे हुए हैं।

जिस मनुष्य का मन परमात्मा में लीन है, उसकी रक्षा स्वयं परमात्मा करता है।

24 हजार से अधिक लोगों ने किया श्राद्ध-तर्पण

सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या : 24 पारियाँ : 12 हजार से अधिक लाभार्थी

आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सद्भाव सम्पन्न गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या के शुभ अवसर पर 12 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध कर्म संपन्न किए। चार अलग-अलग स्थानों पर सामूहिक श्राद्ध तर्पण संस्कार की कुल 24 पारियाँ हुईं। इनमें दूर-दूर से आए परिजनों ने अपने पूर्वजों के साथ-साथ देश भर में विभिन्न आपदाओं, दुर्घटनाओं और प्राकृतिक संकटों में जान गँवाने वाले लोगों की आत्मा की शांति के लिए भी जल अर्पण किया और प्रार्थनाएँ कीं।

सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या के दिन शान्तिकुञ्ज में हो रहा श्राद्ध-तर्पण संस्कार

शान्तिकुञ्ज के युग पुरोहितों ने वैदिक विधि-विधान के साथ पितरों का तर्पण कराते हुए श्राद्ध-तर्पण संस्कार के द्वारा सनातन संस्कृति के संरक्षण और समाज में आध्यात्मिक चेतना के विस्तार की प्रेरक पहल की। श्राद्ध कर्त्ताओं को अपने पितरों के नाम पर एक पेड़ लगाने और उसके पूर्ण विकसित होने तक उसका ध्यान रखने का संकल्प भी दिलाया। आत्मिक उत्थान एवं लोकमंगल के लिए गायत्री उपासना करने के संकल्प भी दिलाए गए।

इससे पूर्व भाद्रपद पूर्णिमा से लेकर सर्वपितृ अमावस्या तक शान्तिकुञ्ज में प्रतिदिन सामूहिक श्राद्ध-तर्पण संस्कार का क्रम चला। विगत 14 दिनों में लगभग 15 हजार लोगों ने अपने पितरों की शान्ति-सद्गति की प्रार्थना के साथ उन्हें जलांजलि दी और पिण्डदान किया।

शान्तिकुञ्ज में सेवा और सुविधाओं के विस्तार के लिए नवरात्र से नए प्रकल्पों का शुभारंभ

शान्तिकुञ्ज और आँवलखेड़ा के बीच सीधी बस सेवा

उत्तर प्रदेश सरकार के विशेष सहयोग से नवरात्र के प्रथम दिन से युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मस्थली आँवलखेड़ा और उनकी कर्मस्थली युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के बीच अब सीधी बस सेवा आरंभ हो गई है। यह बस मेरठ, अलीगढ़, हाथरस और आगरा होते हुए सीधे आँवलखेड़ा पहुँचेगी। उल्लेखनीय है कि इस सेवा को आरंभ करने में उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री माननीय श्री दयाशंकर सिंह जी का विशेष योगदान है। 22 सितंबर 2025 की शुभ वेला में शान्तिकुञ्ज से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने झंडी दिखाकर पहली बस को रवाना किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति आस्था रखने वाले श्रद्धालुओं में शान्तिकुञ्ज के साथ उनकी जन्मभूमि आँवलखेड़ा और तपोभूमि मथुरा के दर्शन करने की सहज अभिलाषा होती है। शान्तिकुञ्ज और आँवलखेड़ा के बीच सीधी बस सेवा आरंभ होने से अब उनकी यह मनोकामना पूरी करना सरल हो जायेगा।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के मत्स्यावतार की तरह निरंतर हो रहे विस्तार और आगामी जन्मशताब्दी वर्ष की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शान्तिकुञ्ज में सुविधाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है। इसी क्रम में नवरात्र के प्रथम दिन शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या के साथ शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी एवं संबंधित कार्यों से जुड़े शान्तिकुञ्ज के अनेक वरिष्ठ परिजनों की प्रमुख उपस्थिति में कई नए प्रकल्पों का शुभारंभ हुआ।

बृहस्पति भवन के लिए भूमिपूजन

शान्तिकुञ्ज में एक नए बहुमंजिला भवन के निर्माण के लिए भूमिपूजन हुआ। 'बृहस्पति भवन' नाम से बनाये जाने वाले इस भवन में 156 कमरे और तीन डॉरमेट्री का निर्माण होगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी बृहस्पति भवन के निर्माण लिए भूमिपूजन करते हुए

स्वावलम्बन कार्यशाला का विस्तार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में हथकरघा उद्योग में उपासना हेतु आवश्यक आसन आदि की बुनाई के लिए एक नए प्रकल्प का शुभारंभ हुआ। अगले वर्ष प्रस्तावित जन्मशताब्दी समारोह को साधना प्रधान बनाया गया है। इसमें विशिष्ट अनुष्ठान करने वाले साधक भाग लेंगे। उन साधकों के लिए उपासना हेतु आवश्यक आसन, माला आदि सामग्री के किट शान्तिकुञ्ज से ही उपलब्ध कराये जायेंगे, ताकि उनमें शुद्धता, पवित्रता, एकरूपता रहे। इस दृष्टि से इस नए प्रकल्प का शुभारंभ किया गया है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने नए प्रकल्प का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह प्रकल्प गायत्री उपासकों में श्रद्धा, पवित्रता और संकल्प की भावना का पोषण करेगा। उन्होंने कहा कि यह परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में स्वावलम्बन और श्रमशीलता को प्रोत्साहन देने वाला है।

शान्तिकुञ्ज में कार्यशाला का भी विस्तार किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यशाला में पहले से ही हवन कुण्ड, काष्ठपात्र, तुलसी की माला, एक्रेलिक फोटो और फोटो लैमिनेशन के साथ अश्वमेध यज्ञ जैसे बड़े आयोजनों के लिए लोहे के पुलों का निर्माण होता है। आगामी जन्मशताब्दी वर्ष की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अब नई मशीनों के साथ कार्यशाला की क्षमता को बढ़ाया गया है।

विद्युत विभाग में उच्चशक्ति के उपकरण

शान्तिकुञ्ज में विद्युत आपूर्ति को बेहतर बनाने के लिए 1010 के.वी. क्षमता वाले उच्च शक्ति जेनरेटर, पैरलल पैनल, सर्वो 630 के.वी., फेस चेंजर आदि विशाल उपकरणों के प्रथम पूजन के साथ उनका शुभारंभ हुआ।

मेडिकल कॉलेज के छात्रों के लिए प्रशिक्षण शिविर

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

शान्तिकुञ्ज में 20 और 21 सितंबर, 2025 को 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' गर्भ संस्कार शाला प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले से बीएएमएस (आयुर्वेद) के 150 विद्यार्थी और प्रोफेसरों ने हिस्सा लिया। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण में भावी माँ के रहन-सहन, खान-पान और प्रसव के पहले और बाद में शिशु की देखभाल जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

प्रतिभागी डॉक्टर्स की महिला मण्डल, शान्तिकुञ्ज की प्रमुख आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी व्यक्तिगत भेंट हुई। वे शान्तिकुञ्ज के ऊर्जावान वातावरण एवं यहाँ की आध्यात्मिक दिनचर्या से बहुत प्रभावित हुए। कई प्रतिभागियों ने देसंविवि. द्वारा संचालित गर्भ संस्कार के ऑनलाइन मॉडुलर कोर्स को करने की इच्छा भी व्यक्त की।

> ईश्वर को सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर सेवा करने से व्यक्ति कभी गलत रास्ते पर नहीं जाता।
> – श्री योगेन्द्र गिरि जी, व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेंद्र गिरी ने समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि ईश्वर को सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर सेवा करने से व्यक्ति कभी गलत रास्ते पर नहीं जाता। इस प्रशिक्षण में डॉ. वंदना श्रीवास्तव, डॉ. अमरनाथ सारस्वत, डॉ. संगीता सारस्वत, डॉ. भावना सिंह और अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे, जिनसे सभी प्रतिभागी बहुत प्रभावित हुए।

गायत्री विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं को मिला राज्य पुरस्कार

सत्र 2023-24 के गायत्री विद्यापीठ के कक्षा 9 से लेकर 11 तक के 14 स्काउट एवं 19 गाइडों को भारत स्काउट एवं गाइड का राज्य पुरस्कार प्रदान किया गया। परम श्रद्धेया जीजी एवं परम श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव जी ने प्रमाण-पत्र प्रदान कर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं गायत्री विद्यापीठ की प्रबंधन समिति की अध्यक्षा श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए स्काउटिंग की भावना को जीवन का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा दी।

श्रद्धेया शैल जीजी से आशीर्वाद लेते पुरस्कार विजेता बच्चे

गायत्री विद्यापीठ में हस्तकला कौशल एवं विज्ञान प्रदर्शनी

गायत्री विद्यापीठ में 23 सितंबर को एक भव्य हस्तकला कौशल एवं विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों ने अपनी असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। छात्रों ने विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों पर आधारित कार्यकारी मॉडल प्रस्तुत किए, साथ ही हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी जैसी भाषाओं पर भी आकर्षक मॉडल बनाए। गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगोल और इतिहास से संबंधित उत्कृष्ट मॉडल भी प्रदर्शनी का हिस्सा थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं आदरणीया शेफाली जीजी प्रदर्शनी देखते समय बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए

कक्षा 9 से 12 के छात्रों ने शिव परिवार (भोलेनाथ, मां पार्वती, गणेश और कार्तिकेय), भगवान श्रीराम का दरबार और भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़ी सुंदर झाँकियाँ सजाईं। नन्हें विद्यार्थियों ने भारत माता के वीर सपूतों, भूले-बिसरे क्रांतिकारियों, भारत की वीरांगनाओं और परम वंदनीया माताजी एवं परम पूज्य गुरुदेव की झाँकियां प्रस्तुत कर सभी को भावुक कर दिया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय चिन्मय पण्ड्या जी और गायत्री विद्यापीठ प्रबंधन समिति की अध्यक्षा श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने किया। परम श्रद्धेया जीजी और परम श्रद्धेय डॉ. साहब ने बच्चों को अपना आशीर्वाद भी प्रेषित किया।

देसंविवि और यूनिवेलसिटी, प्राग के बीच एम.ओ.यू.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज और यूनिवेलसिटी एस.आर.ओ., प्राग (चेक गणराज्य) के बीच शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस एम.ओ.यू. का उद्देश्य वैदिक ज्ञान, आयुर्वेद, योग, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य, जन कल्याण एवं शिक्षा जैसे क्षेत्रों में शैक्षणिक, सांस्कृतिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त शोध एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेंगे और शिक्षा के नए आयामों को मूर्त रूप देंगे।

समझौते पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तथा यूनिवेलसिटी की ओर से डॉ. जाना कोची, पीएच.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर, चार्ल्स यूनिवर्सिटी, प्राग ने हस्ताक्षर किए। इसके अंतर्गत बी-वेल पहल (इलेक्ट्रॉनिक सजीव शिक्षा के माध्यम से जुड़ाव और कल्याण का निर्माण) जैसे एआई आधारित डिजिटल कल्याण प्रकल्पों को प्रारंभ किया जाएगा। साथ ही, समग्र स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों की स्थापना भी की जाएगी, जो शिक्षा, अनुसंधान और सामुदायिक विकास का सशक्त माध्यम बनेंगे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और प्रोफेसर डॉ. जाना कोची एमओयू के दस्तावेजों के साथ

देसंविवि प्रशासन ने इस एम.ओ.यू. को भारत और चेक गणराज्य के बीच शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक रिश्तों को सुदृढ़ करने वाला कदम बताया और इसे वैश्विक कल्याण व सतत विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा।

शुभ दृष्टि मनुष्य को सार्थक जीवन की ओर प्रेरित करती है। अशुभदर्शी होना ही निर्बलता है।

संस्कार एवं संस्कृति के विजय दिवसोत्सव के रूप में मना विजयादशमी पर्व

रामलीला के मंचन के साथ दिया युग संदेश, रावण दहन भी हुआ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में रामलीला के हृदयस्पर्शी मंचन में भगवान राम के पाव पखारते निषादराज केवट

शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने श्री विजयादशमी का पावन पर्व संस्कार और संस्कृति के विजय दिवसोत्सव के रूप में मनाया। इस अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के सर्वोच्च अभिभावक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिस प्रकार भगवान राम ने रावण का वध कर संस्कृति की रक्षा की थी, उसी प्रकार विजयादशमी पर्व में जीवन में आसुरी चिंतन, कुसंस्कारों एवं दुष्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा निहित है। यह जीवन साधना से ही संभव हो पाता है।

देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में भगवान राम के जीवन आदर्शों को उकेरते अत्यंत मार्मिक प्रसंगों को प्रदर्शित करती लघु रामलीला का हृदयस्पर्शी मंचन किया गया। इस भव्य आयोजन में विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कलाकारों ने अपने सजीव अभिनय से सभी का मन मोह लिया। भगवान राम की विभिन्न लीलाओं के साथ युग निर्माणी प्रेरणाओं को बड़ी कुशलता के साथ गूँथा गया था। रामलीला का मंचन अत्यंत मनोरंजक भी था, हर पल पूरा सभागार दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा।

रामलीला मंचन में दशरथ, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण आदि पात्रों का अभिनय अत्यंत प्रभावशाली रहा। प्रमुख कलाकारों में डॉ. नीलमणि, डॉ. देवाशीष गिरी, अंकित, राम प्रताप, फिरोज, नीरज, दूर बादल आदि कलाकारों के अभिनय को खूब सराहा गया। कुलपति श्री शरद पारधी जी, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी और शान्तिकुञ्ज महिला मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली जी ने सभागार में प्रमुख रूप से उपस्थित होकर सभी कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। मंच संचालक ने भी श्रोताओं को सत्प्रेरणाएँ दीं।

रामलीला का समापन 30 फीट ऊँचे रावण के दहन के साथ हुआ। इसके साथ ही कुंभकरण एवं मेघनाथ के पुतलों का भी दहन किया गया। रावण दहन स्थल को एक मेले का रूप दिया गया था, जिसमें चटाकेदार व्यंजन भी उपलब्ध थे। शान्तिकुञ्ज, देसंविवि के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं के अलावा देश-विदेश से आए साधकगण और आसपास के क्षेत्र के निवासियों ने विजयदशमी की मार्मिक प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए मेले का खूब आनन्द लिया।

साधना से अहंकार का विसर्जन होता है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

नवरात्र में प्रतिदिन सायंकाल श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी का गीता पर आधारित वीडिया संदेश दिखाया गया। इसमें श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि अपने मन को सदैव भगवान में और भगवान के कार्यों में लगाओ। जिस तरह से अर्जुन ने अपना सब कुछ भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया था, उसी प्रकार अपने अहंकार को अपने इष्ट में समर्पित करने का नाम साधना है। मीरा, बुद्ध, प्रह्लाद जैसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ भगवद्अर्पण कर दिया था।

भगवान हमारे हृदय से बोलते हैं। भगवान की यह आवाज तभी सुनाई देगी, जब अहंकार का विसर्जन होगा। साधना से अहंकार गलता है और इससे हमारे कर्मों में सात्विकता आती है। चित्त की मलिनता दूर होती है। साधना से साधक में आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण होता है।

अहितकारी सांसारिक चाहतों से मुक्ति दिलाकर आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है नवरात्र साधना। -डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में नवरात्र साधना पर्व पर एक हजार से अधिक साधकों ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के विशिष्ट स्नेह-अनुदानों की अनुभूति करते हुए गायत्री साधना अनुष्ठान सम्पन्न किये। सधकों को इन नौ दिनों में वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से उत्कृष्ट चिंतन और मार्मिक प्रेरणाओं के रूप में जीवन पथ पाथेय प्राप्त हुआ।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने उद्बोधन में नवरात्र को देवी उपासना का महापर्व बताया। उन्होंने कहा कि यह आत्म जागरण तथा चरित्र निर्माण का सर्वोत्तम समय है। इस विशिष्ट समय में जो साधक अपनी ऊर्जा को साधना, सेवा और स्वाध्याय में लगाते हैं, वे अपने जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन ला सकते हैं। नवरात्र में गायत्री साधना अनुष्ठान साधकों को अहितकारी सांसारिक चाहतों से मुक्त कर आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने साधकों को अपनी आकांक्षाओं को भगवान की इच्छा के साथ मिला देने और अपने चिंतन को निरंतर आत्मनिर्माण, आत्मसुधार और आत्मविकास की दिशा में केन्द्रित करने की प्रेरणा दी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज में हिमालय पर्यावरण संवाद

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री ने किया धरती को बचाने का आह्वान

प्रकृति का सम्मान करना भूल जाते हैं, तभी समस्याएँ खड़ी होती हैं।
- माननीय श्री भूपेन्द्र यादव जी, पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्री, भारत सरकार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में 20 सितंबर, 2024 को 'हिमालय पर्यावरण संवाद' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्री माननीय श्री भूपेंद्र यादव थे। उन्होंने धरती और पर्यावरण को बचाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि धरती सभी प्राणियों की आवश्यकताओं को पूरा करती है और इसे बचाने के लिए हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट होना चाहिए। उन्होंने गायत्री परिवार के विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय से समाज के विकास के विजन की सराहना की।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि जब हम प्रकृति का सम्मान करना भूल जाते हैं, तभी समस्याएँ खड़ी होती हैं। उन्होंने पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की दूरदर्शिता का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने दशकों पहले ही पर्यावरण संरक्षण के विषय पर लिखा था।

साहित्य विमोचन करते बायें से श्री अफरोज अहमद जी, डॉ. चिन्मय जी, प्रति कुलपति देसंविवि, माननीय मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव जी तथा श्री रमन कांत जी

राष्ट्रीय हरित अधिकरण के न्यायाधीश श्री अफ़रोज़ अहमद ने प्रकृति के संसाधनों का सदुपयोग करने की बात कही, जबकि भारतीय नदी परिषद के अध्यक्ष श्री रमन कांत और सलाहकार श्री मनु गौड़ ने पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के साथ ही भौतिक विकास करने और प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए पर्यावरण को सुरक्षित रखने पर जोर दिया।

कार्यक्रम का समापन अतिथियों द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं के विमोचन के साथ हुआ।

अपनी भूमि के संग आत्मीयता पूर्वक जुड़ें
- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

कार्यक्रम की अध्यक्षता देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने की। उन्होंने अपने संबोधन में भारत को देवभूमि बताते हुए कहा कि हमें अपनी भूमि से आत्मीयता से जुड़ना होगा, तभी देश समृद्ध होगा और पर्यावरण में संतुलन आएगा। उन्होंने बताया कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय और शान्तिकुञ्ज दशकों से 'जीरो कार्बन फुटप्रिंट' क्षेत्र हैं।

चमोली जिले के नंदानगर क्षेत्र में पहुँचा शान्तिकुञ्ज का आपदा प्रबंधन दल

150 परिवारों के लिए राहत सामग्री पहुँचाई

23 सितंबर को उत्तराखंड के चमोली जिले के नंदानगर क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदा से प्रभावित लोगों के सहायतार्थ गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज से एक राहत दल भेजा गया। इस दल के साथ 150 परिवारों के लिए आवश्यक राशन एवं अन्य सामग्री भेजी गई।

राहत सामग्री की हर किट में जरूरी बर्तन (थाली, गिलास, लोटा), कंबल, तिरपाल और खाद्य सामग्री जैसे 10 किलो आटा, 10 किलो चावल, 2 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2 किलो चीनी, पोहा और मसाले शामिल थे। यह सामग्री आपदा प्रभावित परिवारों की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई थी, जिसे ले जाकर स्थानीय प्रशासन की टीम को सौंपा गया। शान्तिकुञ्ज के आपदा प्रबंधन दल में श्री अरुण तोमर, दिनेश मैखुरी, पुन्नूराम और सात अन्य स्वयंसेवक शामिल थे।

राजभवन में राजा भगीरथ की प्रतिमा का अनावरण

विशिष्ट सम्मान

नवरात्रि के पहले दिन देहरादून स्थित राजभवन परिसर की भागीरथी वाटिका में महान राजा भगीरथ की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस अवसर पर उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त), मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या, तथा उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री दिनेश चंद्र शास्त्री विशेष रूप से उपस्थित थे।

यह प्रतिमा ऋषि भगीरथ के गंगा को धरती पर लाने के अटल संकल्प और दिव्य प्रयास की प्रतीक है। इस अवसर पर, पूज्य गुरुदेव के विचारों तथा राजा भगीरथ की तपस्या और लोक कल्याण की भावना को याद करते हुए बताया गया कि श्रद्धा और समर्पण से हर कार्य को जीवंत और दिव्य बनाया जा सकता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ राजभवन परिसर में स्थित राजराजेश्वर महाकाल मंदिर में विधि-विधान से पूजा-अर्चना के साथ हुआ। इस अवसर पर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और मंगलमय जीवन की कामना की गई।

प्रतिमा अनावरण समारोह में माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री और डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाया गया

23 सितंबर को शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने शान्तिकुञ्ज फार्मेसी परिसर में एक भव्य कार्यक्रम के साथ राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाया। इस अवसर पर यज्ञ और प्रज्ञा गीतों के माध्यम से भगवान धन्वंतरि से राष्ट्र के उन्नयन और सभी देशवासियों के आरोग्य की मंगलकामना की गई। इस कार्यक्रम में देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शैफाली पण्ड्या जी सहित डॉ. वंदना श्रीवास्तव, शिक्षकगण और फार्मेसी के कर्मचारियों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने इस वर्ष से 23 सितंबर को राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। सरकार की ओर से इस वर्ष के आयुर्वेद दिवस के आयोजन का विषय रखा गया था **'आयुर्वेद फॉर पीपुल एण्ड प्लेनेट'**। डॉ. चिन्मय जी ने आयुर्वेद के सम्मान में पौधारोपण करते हुए कहा कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीने से ही दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य संभव है।आयुर्वेद केवल उपचार का विज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक पूर्ण कला है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.10.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26